Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

रामदरश मिश्र के काव्य में छन्द योजना

www.ignited.in

रामदरश मिश्र के काव्य में छन्द योजना

Dr. Manju Sharma

Asst. Prof. Hindi, Set Banarasi Das College of Education, Kurukshetra, Haryana, India

---------------------------♦-----------------------------

‘छन्द’ शब्द का अर्थ कोष में आल्हादन भी है1 –फछन्द आल्हादयति इति छन्दःय अर्थात् जो मनुष्यों को प्रसन्न करता या आनन्द देता है, वह छन्द है।आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तो स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि ‘कविता का पूरा सौन्दर्य छन्द को लय के साथ जोर से पढ़े जाने में ही खिलता है। शब्दों की चलती लय में कुछ विशेष माधुर्य है। इसलिए अन्यत्रा भी वे स्वीकारते हैं–फछन्द के बन्धन के सर्वथा त्याग में हमें तो अनुभूत नाद–सौन्दर्य की प्रेषणीयता का प्रत्यक्ष ह्रास दिखाई पड़ता है।य इससें स्पष्ट है कि छन्द का काव्य में बहुत महत्त्व है। वस्तुतः दोनों का सम्बन्ध भी आकस्मिक न होकर अनिवार्य एवं अति प्राचीन है।

काव्य में छन्द का महत्त्व निर्विवाद होते हुए भी कई विद्वानों का मत है कि छन्द काव्य के लिए एक अनावश्यक बन्धन है और उत्कृष्ट काव्य के लिए इस बन्धन से मुक्ति पाना आवश्यक है। इन विद्वानों का मत है कि छन्दों के जाल में उलझकर कवि की प्रतिभा कुंठित हो जाती है। वर्ण्य, मात्रा आदि की निश्चित योजना रखने की चिन्ता में कवि की अनुभूतियों का आवेग शिथिल पड़ जाता है और काव्य उसके लिए बु(ि का चमत्कार बनकर रह जाता है यदि छन्दों का बन्धन न हो तो कवि मुक्त हृदय की तरह अनुभूतियों का स्वच्छन्द चित्राण कर सकता है। परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि आधुनिक युग में छन्दों की उपादेयता विशेष रूप से संदिग्ध मानी जाती है। आधुनिक युग में नयी कविता में प्रायः छन्दों का बहिष्कार किया गया है तथा मुक्त एवं स्वच्छन्द छन्द के रूप में प्रवाहित हुई हैं। परन्तु ऐसा होने पर भी छन्द का काव्य में विशेष महत्त्व है तथा छन्द विधान कोई तुकबंदी मात्रा न होकर काव्य भाषा में लयात्मकता एवं प्रवाहमयता लाने वाला विधान है। छन्द एवं काव्य में आत्मा एवं शरीर का सम्बन्ध है। छन्द में मानव मन को मुग्ध करने की क्षमता होती है। साथ ही हमारी स्मरण शक्ति में सहायक होता है। नाद और लय में विलक्षण सामर्थ्य है और इसलिए छन्द काव्य में प्रभाव को अधिक भावना ग्राही एवं संवेदनामूलक बनाता है।

ध्वनियों का सुनियोजित व्यवस्था में होना छन्द–रचना का मूल आधार है। इसलिए छन्द का लक्षण है–फकिसी रचना के प्रत्येक पद के मात्राओं अथवा वर्णों की नियत संख्या, क्रमयोजना एवं यति के विशेष विधान पर आधारित नियम को छन्द कहते हैं।य2

कविवर रामदरश मिश्र जी ने मात्रिक एवं वर्णवृत्त दोनों ही प्रकार के छन्दों के प्रयोग अपने काव्य में किये हैं।

मिश्र जी के काव्य में वीर अथवा आल्हा छन्द योजना :

वीर छन्द में 16–15 पर यति के साथ 31 मात्राएँ होती हैं। अन्त में { । ;गुरु लघुद्ध रहता है।

धू धू जलते थे अनन्त में

कितने सम्राटों के ताज

दहक रह थे अग्नि–शिखा के

मतवाले शाहों के साज।य3

मिश्र के काव्य में ताटक छन्द योजना :

इस छन्द में 16–14 पर विश्राम के साथ 30 मात्राएँ होती है। मिश्र जी के काव्य से लिया गया यह उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

न जाने कौन – कौन से पंछी

कहाँ – कहाँ से आते

डाल डाल पर पफुदकते हैं

चहचहाते हैं, गाते हैं।य4

धूप उसी तरह चुप होकर

शाम को कुछ गुनेगी

और सुबह होते ही बच्चों की तरह खिलखिलायेंगी

प्रकृति में उसी तरह उगता रहेगा।य5

मिश्र जी के काव्य में समान सवाई छन्द–योजना :

इस छन्द में 16–16 मात्राओं पर यति होती है और अन्त में दो गुरु होते हैं। यह छन्द बहुत रस सि(होता है। मिश्र जी के काव्य से लिया गया ये उदाहरण द्रष्टव्य है–

गली गली औ कूचे – कूचे

मटक रहा पर राह न पूछे

काँप गया वह, किसने पूछा–

सुनिये – आप किधर जायेंगे?य6

गंधकुल आकाश नशीला

पी कर पत्थर भी है गीला

www.ignited.in

भीग रहे उजले उजले पथ

बरबस मन का बन्धन ढीला।य7

मिश्र जी के काव्य में विधाता छन्द–योजना :

जिस छन्द के प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ हों तथा 14–14 मात्राओं के पश्चात् यति हो उसे विधाता छन्द कहते हैं। मिश्र जी के काव्य से लिया गया यह उदाहरण द्रष्टव्य है–

सूनी सूनी आँखों से

क्या देख रही हो दादी

अपने बगीचे के उजाड़ में

न जाने कब से खड़ी।य8

;वसंत : आठ कविताएँद्ध

यह बुखार भी खूब है

झूठ बोलकर चला गया

कहीं ऐसे भी तनहाई कटती है

कि जिन्दगी चलती है?य9

;बादलों को देख रहा हूँद्ध

मिश्र जी के काव्य में सार छन्द योजना :

फ्सार छन्द के प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं। 16 और 12 पर यति होती है एवं अन्त में दो गुरु होते हैं।य3 मिश्र जी के काव्य से लिये गये सार छन्द के उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

प्राण प्राण पर बहने वाली

मेरी छाँह न बांधो

मैं न किसी का बन्दी हूँ

दास न पाषाणों का।य10

;मेरी राह न बांधोद्ध

अन्न की तलाश में भटकती

भूख से पफटी आंखें

पल भर जुलूस को देखती हैं

कि उनमें धर्म की पिचकारी

मार दी जाती है।य11

मिश्र जी के काव्य में हाकलि छन्द योजना :

हाकलि छन्द के प्रत्येक चरण में 14–14 मात्राएँ होती हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार है–

कौन उसे अब समझाये

भइया आगे थाना है।य12

;हँसी ओठ पर आँखें नम हैंद्धद्ध

समाचार पत्रा की तरह

पफैंक गया है सुबह को

मकान – मकान के आगे

धूप की चुस्की लेता हुआ

हर दरवाजा बांचता है।य13

मिश्र जी के काव्य में हरिगीतिका छन्छ–योजना :

फ्इसमें 14वीं या 16वीं पर विश्राम के साथ 28 मात्राएँ होती हैं। इसका निर्माण सप्तक की चार आवृत्तियों से होता है। अन्त में ।{ रहता है।य14

आकाश में टँगा हुआ

सुनहला चीर सूखता

नहायी पेड़–पेड़ पर

बिखरे केश की लहर।य15

;वर्षा के बाद की एक शामद्ध

सामने के राजमार्ग से

बार – बार गुजरते

हाथी – घोड़ों के जुलूस की

वह जय बोलता है।य16

मिश्र जी के काव्य में माधव मालती छन्द योजना :

फ्इसमें 28 मात्राएँ होती हैं। 12वीं या 14वीं मात्रा पर विश्राम रहता है। इसका निर्माण सप्तक की चार आवृत्तियों से होता है। इसके अन्त में ;{{।द्धि या ;।।द्ध रहता है।य17

आ रहा उस पार से

उस पार तक चलता रहूंगा

विश्व में जब तक निशा

तब तक सदा जलता रहूँगा।य18

;ज़िन्दगी की राह परद्ध

शयन भी करता गया हूँ

कल्पना के पेड़ नीचे

रूप के सित शृंग से गिर कर

पिपासा की तटी में19

;ज़िन्दगी की राह परद्ध

मिश्र जी के काव्य में मिताक्षरी छन्द योजना :

फमिताक्षरी में 8–7 पर विश्राम के साथ 15 वर्ण होते हैं। अन्त में गुरु अवश्य रहता है।य20

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि रामदरश मिश्र जी ने अपने काव्य में अनेक छन्दों का सपफल प्रयोग किया है। उन्होंने आल्हा, ताटक, समान सवाई, विधाता, सार, हाकलि, माधव मालती, हरिगीतिका तथा मिताक्षरी सभी छन्दों का प्रयोग उचित ढंग से किया है। यों तो मिश्र जी के काव्य में सभी छन्दों का सपफल प्रयोग हुआ है, लेकिन प्रधानता वीर आल्हा, ताटक तथा समान सवाई छन्दों की ही रही है।

संदर्भ सूची :

1. हरिशंकर शर्मा, छन्द विज्ञान की व्यापकता, पृ. 02

2. डॉ॰ ओमप्रकाश शर्मा शास्त्री, काव्यालोचन, पृ. 390

3. रामदरश मिश्र, रामदरश रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, पथ के गीत, पृ. 67

4. रामदरश मिश्र, रामदरश रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–2, आग कुछ नहीं बोलती, पृ. 109

5. वही, बारिश में भीगते बच्चे, पृ. 216

6. रामदरश मिश्र, रामदरश रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–2, जुलूस कहाँ जा रहा है, पृ. 43

7. वही, भाग–1, पथ के गीत, पृ. 88

8. वही, आग कुछ नहीं बोलती, पृ. 153

9. वही, बैरंग बेनाम चिट्ठिòयाँ, पृ. 185

10. रामदरश मिश्र, रामदरश रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, पथ के गीत, पृ. 46

11. वही, भाग–2, जुलूस कहाँ जा रहा है, पृ. 6

12. वही, हंसी ओठ पर आँखें नम हैं, पृ. 332

13. रामदरश मिश्र, रामदरश रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, पक गई है धूप, पृ. 271

14. डॉ॰ गौरीशंकर मिश्र 'द्विजेन्द्र', छन्दोदर्पण, पृ. 105

15. रामदरश मिश्र, रामदरश रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–2, कुछ अन्य कविताएँ, पृ. 463

16. रामदरश मिश्र, रामदरश रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, दिन एक नदी बन गया, पृ. 461

17. डॉ॰ गौरी शंकर मिश्र, 'द्विजेन्द्र', छन्दोदर्पण, पृ. 105

18. रामदरश मिश्र, रामदरश रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, पथ के गीत, पृ. 06

19. रामदरश मिश्र, रामदरश रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, पृ. 05

20. डॉ॰ गौरी शंकर मिश्र, 'द्विजेन्द्र', छन्दोदर्पण, पृ. 105

21. रामदरश मिश्र, रामदरश रचनावली ;कविता खण्डद्ध भाग–1, बैरंग बेनाम चिट्ठिòयां, पृ. 237